मुक्तक लहरी
डॉक्टर करुणा शंकर दुबे

BIODATA

नाम – डॉ0 करुणा शंकर दुबे

पद – सहायक निदेशक,आकाशवाणी,भारतीय प्रसारण सेवा (कार्यक्रम)एवं केन्द्राध्यक्ष आकाशवाणी ,अल्मोड़ा

पिता का नाम – स्व0 पं0 कीर्ति शंकर दुबे

माता का नाम – स्व0 शशि प्रभा दुबे

पत्नी–श्रीमती गीता दुबे

जन्म – 14 जून 1958

शिक्षा – **प्रारम्भिक शिक्षा** – प्राथमिक विद्यालय, पक्की

बाजार(अर्दली बाजार) वाराणसी

उच्च शिक्षा –काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

– एम0 ए0 संस्कृत ,कला संकाय (का0हि0वि0वि0)

– पी0 एच0 डी0, कला संकाय (का0हि0वि0वि0)

– आचार्य पालि ,सम्पूर्णानन्दन संस्कृत विश्वविद्यालय

– 1984–85 बी0जे0 पत्रकारिता के छात्र रहे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

– शोध गवेषक – विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा –तुलनात्मक पालि और बौद्ध शब्द कोष का अध्ययन कार्य हेतु।

– भूमण्डल(वाराणसी) – पाक्षिक हिन्दी के प्रतिनिधि

अध्यापन–काशी हिन्दू विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग (कला संकाय) वर्ष 1981–82 एवं वर्ष 1982–83(अनुबंध के आधार पर)

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी – बौद्ध वास्तु कला एवं एशिया की राष्ट्रीय संस्कृतियां 07 से11 मार्च 1989

प्रकाशन –

1–सौन्दरनन्द महाकाव्यम् (सम्पादन एवं अनुवाद) चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी (1989)

2–वैदिक एवं पालि साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ,जगदीश संस्कृत पुस्तकालय,झालानियों का रास्ता,किशन पोल बाजार,जयपुर (2015)

।

सम्मान – योगीराज अरविन्दो घोष निबन्ध माला के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा सम्मानित (1980) वाराणसी साइकिलिग एसोसियेशन द्वारा कहानी लेखन के लिए सम्मानित (1972)

–पं0जगदीश नारायण मिश्र की स्मृति में 'प्रेरक सम्मान–2016' 23 अक्टूबर 2016 को राष्ट्रीय पुस्तक मेला–2016 ,मोती महल वाटिका ,लखनऊ ।

भूमिका – डॉ0 रमेश चन्द्र शुक्ल की पुस्तक पालि परिचयिका की भूमिका ।

वर्तमान – निरन्तर लेखन जारी ।

पत्र पत्रिकाओं में लेखन – 1–विषय –कबीर और रहीम के दोहों की सामाजिकता–अक्टूबर–दिसम्बर–2008,गगनांचल, अंक–31,भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्–आईसीसीआर (नई दिल्ली)

2–विषय –कहानी पिंजरा , गगनांचल,–मार्च–अपैल–2014,अंक2, वर्ष–37,भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्–आईसीसीआर (नई दिल्ली)

3–विषय–लोक मंगल का साहित्य हिन्दी,अंक–5,वर्ष–2008–09,सूचना भारती{सूचना और प्रसारण मन्त्रालय,(मुख्य सचिवालय की गृह पत्रिका)नई दिल्ली}

4–विषय–अथ कथा पाण्डेपुर,काशी अंक–2,सोचविचार पत्रिका,ईश्वरगंगी, (वाराणसी)

5–विषय–आयोडीन युक्त नमक,वर्ष–फरवरी –2009,पत्रिका–उजाला (कलाकुंज ,साक्षरता निकेतन,राज्य संसाधन केन्द्र,लखनऊ–226005) एवं निरंतर लेखन ।

6–विषय–बाबा नागार्जुन,वर्ष–नवम्बर –2013,पत्रिका–उजाला (कलाकुंज ,साक्षरता निकेतन,राज्य संसाधन केन्द्र,लखनऊ–226005)

7–विषय–बैसवारी अवधी साहित्य,वर्ष–फरवरी –2014,पत्रिका–उजाला (कलाकुंज ,साक्षरता निकेतन,राज्य संसाधन केन्द्र,लखनऊ–226005)

8– विषय –निर्दोष चित्त विकास की भावना और बौद्ध धर्म , वर्ष –42,अंक–9, सितम्बर–अक्टूबर –2011,पत्रिका– उत्तर प्रदेश (सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग पार्करोड़,लखनऊ–226001)

9– विषय –हिन्दी साहित्य के मनीषी–आचार्य विद्या निवास मिश्र , वर्ष –42,अंक–, फरवरी –2014,पत्रिका–उत्तर प्रदेश (सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग पार्करोड़,लखनऊ–226001) एवं निरंतर लेखन

10– विषय –कविता–पर्यावरण , वर्ष –42,अंक–9, जुलाई –2013,पत्रिका– उत्तर प्रदेश (सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग पार्करोड़,लखनऊ–226001)

11–विषय–योग और चित्तवृत्ति ,पृष्ठ–25, वर्ष–1992,पत्रिका –वेद प्रदीप (त्रयंबक रोड़,नाशिक–422002)

12–विषय–यथार्थवादी साहित्यकार श्रीलाल शुक्ल,अंक–अक्टूबर–दिसम्बर–2013,साहित्य भारती उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान(लखनऊ–226001)

13–विषय–कहानी–जोरन,पृष्ठ–70,अंक जनवरी–मार्च–2017,साहित्य भारती ,उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान(लखनऊ–226001)

14–विषय –कविता की वाचिक परम्परा, ,वर्ष–4,अंक–4,अप्रैल–जून–2010,पत्रिका–शोधार्णव(सन्त श्री भवानी शंकर जन सेवा समिति उरई–जालौन)

15–कलाकुंज में प्रकाशित लेख (सीतापुर)एवं निरंतर लेखन ।

16–नेशनल बुक ट्रस्ट(भारतीय पुस्तक न्यास,भारत)द्वारा प्रकाशित पुस्तक –लोककला नवनीत में वर्ष 2018 में लोक कथा परम्परा विषय लेख

वर्तमान पता – 1/148, रुचि खण्ड–2, शारदा नगर, लखनऊ–226002

सदस्य – भिक्खु जगदीश काश्यप बौद्ध एवं एशियाई अध्ययन संस्थान सारनाथ–वाराणसी–221007

फोन/मो0 – **9453061788, 0522–2446711**

.....0.....

अभिमत

जगद्गुरू भारत की भूमि का अपना एक विशेष महत्व है। अध्यात्म एवं ब्रहमाण्ड की विलक्षण भाषा–परम्पराओं से सराबोर साहित्यिक सांस्कृतिक जीवन को नये आयाम देना ही भारतीयता है, इसके वास्तविक स्वरूप को समझते ही प्राणी स्वयं को प्रकृति से जुड़ा अनुभव करने लगता है। यहाँ के रीति–रिवाज की श्रृंखला असीमित है, तथा प्रत्येक साहित्य की अपनी भाषा भी होती है और उसका अपना जन–जुड़ाव भी होता है। इसके पीछे कोई न कोई रहस्य अवश्य छिपा हुआ होता है। अपने धर्म, आस्था, पूजा और अर्चना को मूर्तरूप देने के लिए प्रतीक मन्त्र और गाथा है जो सम्पूर्ण भारतीयता को अतीतकाल से वर्तमान तक को समृद्ध बनाये हुए हैं। चाहे कर्मकाण्ड के बहाने से जोड़ते रहे हो या दुःख से मुक्ति पाने के लिए कविता मार्ग में समाधान के स्रोत के रूप में उपलब्ध होते रहे हैं। यह विवेचन प्रतीक रूप नहीं है मनुष्यता को जीवंत रखने का सहज माध्यम है किसी भी शुभ अवसर पर या किसी भी मंगल कार्य पर परिवार के लोग इन साहित्यों के मर्म का स्मरण अवश्य कर लेते हैं, मानो अपनी समृद्ध परम्परा को सजीव और साकार कर रहे हों।

यद्यपि समय के साथ साहित्य और साहित्य के विषय को अब उतने विस्तार जानने की प्रवृत्ति घटती जा रही है फिर भी हमें अपनी मूल संस्कृति से जुड़े रहना है। यही भारतीय होने का धर्म है क्योंकि इसके द्वारा हम अपने अस्तित्व को बनाये रख सकते हैं। साहित्य का अध्ययन न केवल ज्ञान वृद्धि के लिए संतुलित आहार है अपितु समृद्ध अतीत, वर्तमान और भविष्य को सार्थक करने का सर्वोतम साधन भी है।

अतीतकाल में प्रकृति–देव आराधना के लिए भरपूर समय था उसके लिए सब कुछ मनुष्य कर लेता था। वर्तमान भागती–दौड़ती ज़िन्दगी में अधिक व्यस्तता और आधुनिकता ने समाज को बोझिल कर दिया हैं। सामाजिक सौहार्द रुठ गया है हम अपना मूल स्वरुप खोते जा रहे हैं। हमारी प्रचलित रीतियां लुप्त होती जा रही हैं या नष्ट–प्राय हैं। हमें उनका व्यवहारिक रूप बनाये रखना है ऐसे समय में इस पुस्तक की रचना का उद्देश्य लोगों के बीच अपनी खोयी हुई ऐतिहासिकता को जगाने का और जानने का सहज कार्य करने में सक्षम होगा। शहरी जीवन में पले लोग अपनी संस्कृति को जान सकेंगे कि हमारा अतीत कहाँ है और हम कहाँ हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशन का श्रेय परम् आदरणीय मित्र रमेश चन्द्र शुक्ल जी को जाता है जिन्होंने मुझे कई बार इस पुस्तक के लेखन कार्य हेतु प्रेरित किया उनकी प्रेरणा का परिणाम है कि यह पुस्तक आपके सम्मुख प्रस्तुत करने मे मैं सक्षम हो पा रहा हूँ, मैं हृदय से उनका आभारी हूँ। साथ ही मै आभारी हूँ अपनी धर्मपत्नी की विदुषी डॉ0 गीता दुबे का

जिन्होंने सदैव उत्साहित किया पुत्री चयनिका के हिन्दी और संस्कृत के विद्वत्तापूर्ण शब्द और कनिष्ठा के सुझाव का मै कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपने अमूल्य समय में से मुझको गति प्रदान की।

अन्त में श्री जितेन्द्र कुमार पंजाब एण्ड़ सिंध बैंक के अधिकारी के साथ इरा के स्नेह का भी ऋणी हूँ जिनके सुअवसर से यह कार्य अपनी पूर्णता को प्राप्त हो सका। प्रकाशक महोदय के बिना यह कार्य सम्भव नहीं था अतः उनका भी आभारी हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठकजन इस मुक्तक–लहरी का अवश्य स्वागत करेंगे। इस प्रयास में छपाई सम्बन्धी त्रुटियां सम्भव हो सकती हैं उसके लिए क्षमा करने का कष्ट करेंगे।

डॉ0 (करुणा शंकर दुबे)

गंगादशहरा
पता–एम.आई.जी.
1/148, रूचि खण्ड–2
शारदा नगर, रायबरेली रोड
लखनऊ –226002

अनुक्रमणिका

1-अंगुलियाँ

2-उड़गन की बात निराली,ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार

3-माँ गँगें तरल तरंगें

4-जय हिन्दी

5-घुटना

6-शैवाल -गीत

7-बादल आये

8-जिनमें कोयल की कला है, पुरस्कृत हो रहें है

9–दिल लगाया हिमाला से

10-चिंगारी

11-चमचा

12- कलि

13-तरई के गाँव में ,चन्दा नहाय रहा

14-ऐरे गैरे

15-कविता

16-भेडिया और कबीर

17-तुम्हीं तो हो मेघ

18-संतराश

19-प्लेट फ़ार्म

20-देहरी का सूरज

21-चढ़ना (आरोहण)

22-पोखर

23-चुड़ैल

24-लंका

25-भला किसे अच्छा लगता है ?

26-पर्यावरण

27- कुरेदना

28-आचमन

29-भवितव्य

30-अमरत्व

----------0----------

1-अंगुलियाँ

सुनाते है अँगुलियों की कहानी जुबानी ।
आकार प्रकार है अपने आप में बारानी ।
बाबू देहाती रहो या बन के रहो शहरी ।
अंगुलियाँ सदा से रही है समय प्रहरी ।
अँगुलियों में वर्तमान का होता संबल ।
इशारा कर बनाती अचल को सचल ।
अंगुलियाँ न हो तो लेखनी न हो सबल ।
तार बेतार छिपा अँगुलियों की पहल ।
बाबू देहाती रहो या बन के रहो शहरी ।
अंगुलियाँ सदा से रही है समय प्रहरी ।
सीमाओं पर जितनी चौकसी की होती मजबूरी ।
उससे भी ज्यादा हथेली में होती है अंगुली जरूरी |

अंगुलियाँ थाम बापू से सीखते है सब देश सेवा ।
आज अँगुलियों से चख रहे है लोकतंत्र का मेवा ।
बाबू देहाती रहो या बन के रहो शहरी ।
अंगुलियाँ सदा से रही है समय प्रहरी ।
अंगुलियों के ककाहरों ने उपजाया साहित्य भण्डार ।
अंगुलियाँ बनी कभी सुख-दुःख का भी आगार ।

अँगुलियों के योग कालिदास विद्योत्तमा पा चुके ।
गुणी करतबी अँगुलियों से अमर साहित्य गा चुके ।

बाबासाहेब की अंगुली समता से रही भरी ।
दादी-नानी की अंगुली ममता से रही भरी ।
चाचा-दादा की अनुशासन पाठ की रही।
नाना मामा की अंगुली दुलार की रही ।
बाबू देहाती रहो या बन के रहो शहरी ।
अंगुलियाँ सदा से रही है समय प्रहरी ।
आकार में पांच अंगुली समय की प्रहरी ।
हर दिन हर पल अंग-प्रत्यंग की देखहरी।
किसानी में फसल पर तर्जनी कभी न दीजिये ।
शनि में फसें तो मध्यमा का वरण कीजिये ।
वर नौकरी साथ तो अनामिका में लीजिये ।
ज़िन्दगी को सरल कनिष्ठा इशारे कीजिये ।
मुश्किलों में कभी अंगूठा दिखा न दीजिये ।
अंधों और पंगु की लाठी अँगुलियों बिन है बेकार ।
धीमान बिन अँगुलियों, नाविक ज्यों बिन पतवार ।
अँगुलियों की है शान बन अर्जुन आज भी है महान ।
अँगुलियों के कारण एकलव्य का जीवित है दान ।
बदले है हालात अँगुलियों का रौब भी है बदला ।
ज़िन्दगी के दाँव पर ट्रिगर दबाती अंगुलियाँ ।
लिपिब्रेल नेत्र हीनों को राह दिखाती अंगुलियाँ ।

ढ़ोल थापों पर सुरसाज बिखेरती है अंगुलियाँ ।
कहाँ तक कहें अँगुलियों की बात ही रही ।
स्वाद देती यदि अंगुलियाँ हो रसभरी ।
अँगुलियों में फँस रही कम्प्यूटर की जादूगरी ।
मोबाईल की ज़िन्दगी में छिप गयी भुखमरी ।
बाबू देहाती रहो या बन के रहो शहरी ।
अंगुलियाँ सदा से रही है समय प्रहरी ।

--------0—

2-*उड़गन की बात निराली,ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार *

उड़गन की बात निराली,ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार ।
जीव जगत और प्रकृति पुरुष की , महिमा अपरम्पार ।।

खनिज , नदियाँ और पहाड़ ,धरती का आगार ।
सूरज चन्दा अहर्निश निगरानी , देते ऊर्जा बारम्बार । ।

उड़गन की बात निराली,ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार ।
कलियों में मदन क्यारी रसिकन को माली की लगे है मार ।
हरियाली वृक्षों का श्रृंगार ,सुमनों में भौंरो का गुंजार । ।

गगन में पक्षी कलरव करते , मेघ धरा पर करत फुहार ।
जूही -चम्पा क्यारी-क्यारी झूमें , लहराये राजमार्ग कचनार । ।
उड़गन की बात निराली,ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार ।

ग्रीष्म ताप आतप धूसरित धूर , नदियाँ भई कछार ।
पुरवाई की मस्तानी में,लबालब बहै शीतल मंद बयार ।।
धान-किसान कहे गेंहू में हमहूँ ,अरहर जीवन करै संवार ।
शीत की भीत खानपान से जब्बर,जीव रखे साधु विचार । ।
उड़गन की बात निराली,ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार ।

सावन -भादों जीवन यौवन संग साथ रहे सदा बहार ।
सौमनस्य व्रत ले मनुज,सीख दे मानवता का उध्दार । ।
सब जन हो अपना सा जब मिले भाव नमन उपकार ।

जीवन खुशहाल रहे, उत्साह उमंगों में रहे सदा सहकार । ।
उड़गन की बात निराली,ढूंढ रहे निशीथ में सारा संसार ।

--------o--------

3-माँ गँगें तरल तरंगें

माँ गँगें तरल तरंगें अविरल धारा ,जीवन संगे |
रूप निखारें लहर -लहर में रवि रश्मियों के रंगें |
जीवन संगे ,
माँ गंगे ,
तरल तरंगें |
रूप सुनहरा निखर रहा माँ जग कहता सारा |
बूँद – बूँद पर सूरज ,चांद ,सितारे देते पहरा |
जीवन संगे ,
माँ गंगे ,
तरल तरंगें |
उच्छल जलधितरंग निशदिन जन कल्याणक गंगा |
सैकत मध्य विचरती नर-मुनियों की आश्रय गंगा |
जीवन संगे ,
माँ गंगे ,
तरल तरंगें |
ऊँच – नीच छोड़कर धर्म कर्म संस्कार जगाती |
दीनों–दुखियों में हर-पल माँ अमृत रस बरसाती |
जीवन संगे ,
माँ गंगे ,
तरल तरंगें |

गंगा सागर तक बस इसी तरह बहती रहना |
धराधाम पर माँ अजस्र स्रोत सी बहती रहना |
जीवन संगे ,
माँ गंगे ,
तरल तरंगें |
पूत भाव से अमल –विमल बनी रहें गंगा |
मनोकामना मन-मल दूर करें पावनी गंगा |
जीवन संगे ,
माँ गंगे ,
तरल तरंगें |
माँ गँगें तरल तरंगें तेरी अविरल धारा ,जीवन संगे |
रूप निखारें लहर - लहर में रवि रश्मियों के रंगें |
जीवन संगे ,
माँ गंगे ,
तरल तरंगें ||

4-जय हिन्दी

धरती की गरिमा नभ की ऊँचाई है हिन्दी ।
सागर से गहरी मन की गहराई है हिन्दी ।।

विश्व बन्धुता की द्योतक मानवता की प्रेरक ,
सरस सुयोजित वाणी की सच्चाई है हिन्दी ।

कर सोलह श्रृंगार अंक में नव रस को धारे ,
हर मौसम की अलग-अलग अंगडाई है हिन्दी ।

युग-युग तक जिसकी महिमा हर जिह्वा पर होगी ,
सूर कबीरा तुलसी की कविताई है हिन्दी,

इसे राजभाषा कहकर सीमित क्यों करते हो ?
जब पूरी वसुधा पर ही सरसाई है हिन्दी ।

जिसकी पावनता को नित दिनकर भी नमन करें ,
उस भारत के आंगन की अमराई है हिन्दी ।

आओं ऊँचे स्वर में इसकी जय बोलें ,
देवो की वाणी से मिलकर आई है हिन्दी ।

.....

5-घुटना

जीवन का पल-पल जब लगने लगे अपना ।
थाम लेता मोह से घट , घुटन और घुटना ।
घुट - घुट जीवन चलता ,जैसे चलता सपना ।
भ्रमित मन कहता ,कपोल कल्पित कल्पना ।
घुटरन रेनु तन मण्डित ,वन्दित शोभित वदना ।
आधार बन आयाम दिखे है ,जीवन का घुटना ।
व्यायाम- प्राणायाम गुह्य तथ्य है मनना जपना ।
घट का संकट भवसागर के मझधार में पड़ना ।
केशों से होता परिवर्तन, सजना और संवरना ।
असमय घुटेकेश हो जाता कातर मनुज मना ।
अटल चक्र आकर्षक पद ,मोह और गहना ।
माया जगत सब झूठे , जब रूठ गये घुटना ।
घुटता यौवन घटता जीवन क़ायम रहे टंखना।
घट का क्षरण ,मरण, विन्यास केश करना ।
जय जन ,मन संग, सब मिल कर रहना । ।

-------0-------

5-कल

दिनमान से पहले होता कलरव ,होता कल्लोल चित चपल ।
अब की सुधि कह गये कबीर , विचारों में त्यागें कल ।

युग दोष समाया जीवन में , मन्वन्तर युग में ही है कल ।
जन-जनमत के भेद को जान , मनुज नित निरख संभल ।

दिनमान से पहले होता कलरव ,होता कल्लोल चित चपल ।
अब की सुधि कह गये कबीर , विचारों में त्यागें कल ।

तटिनी गतिमान बनी रहती ,अहर्निश जन-मन हित प्रतिपल ।
तट आहट देती जन-जन को , हर क्षण कहती कल-कल ।

कल को आधार बना लें , सजालें स्वयं का जीवन सम्बल ।
अतीत की प्रतीति होती सुनीति,इसी से होता सब जन सफल ।

दिनमान से पहले होता कलरव ,होता कल्लोल चित चपल ।
अब की सुधि कह गये कबीर , विचारों में त्यागें कल ।

परिणति भाव भरे विनीत ,अनीति त्याग मन कर विमल ।
सोच कल को विषय विकार के , समाज का पी रहे गरल ।

एकाकी ही जन हर रहे ,शिवत्व भाव से हो रहे जन निर्मल।
मोह-माया भाव तिलांजली देकर ,स्नेहिल मन चलता चल ।

दिनमान से पहले होता कलरव ,होता कल्लोल चित चपल ।
अब की सुधि कह गये कबीर , विचारों में त्यागें कल ।

आत्मबल से हो सहज ,वर्तमान में कभी न कहें कल ।
सपनों में निर्झर बहा करे रहे ,उज्ज्वल हीरक और धवल ।
भूलें अतीत मनवांछित मिलता पुरुषार्थ हो यदि सबल |

कल्पना के चित्रों में, वर्तमान सहेजे हर दिन हर पल |
दिनमान से पहले होता कलरव ,होता कल्लोल चित चपल।
अब की सुधि कह गये कबीर , विचारों में त्यागें कल ।

xxxxxxxx

6-शैवाल -गीत

उकेरता हूँ,
गीत शैवालों के ,
प्रीत ,
रीत के बिखेरता हूँ ,
शैवाल के वितान पर ,
नया,
राग छेड़ जाता हूँ ।
बात,
नयी छोड़ जाता हूँ ,
कसक,
मीन की रह जाती है ,
कैलेण्डर चित्र सरीखे ,
अतीत हो चले शैवालों के ।
देखी किसने काई ,
सावन दादुर टेर भेजने के ,
केंचुआ विहीन मेड़ ,
छोड़ खेत की सीता देखता हूँ ,
पोखर छोड़ टिड्डीयाँ ,
लोहित शाम खोजता हूँ
शैवाल चादर थे,
मीन की धरोहर

वही तल्प टिड्डी की,
दादुर थे उसके चौकीदार ,
शरद सुहाते सिंघाड़े के,
शैवाल हुए संघाती ,
प्रति-पर्वों की ऊपज,
इसी से आती
पर जलमुर्गी खिंची लकीर सरीखी
प्रकृति की मार
शैवालों पर नीति के,
नये रुप को उतारता हूँ ।
बने दरारों के खेत ,
शैवाल,सीप,मोती निहारता हूँ ।
रेत में छवि अतीत की,
निज निखारता हूँ ।
शैवाल की ओट में निखरता हूँ
उभारता हूँ ।
प्रीत बहोरता हूँ शैवालों के साथ
शोकाकुल पछताता हूँ
ताल-तलैया-पोखर के घहराते संकट में
गहराता जाता हूँ
यक्ष -प्रश्न
सम्मुख शैवालों के
गीत बिम्बित ,प्रतिबिम्बित करता हूँ ।
खीचता,खरोचता हूँ ,

नित मीत शैवाल गीत सहेजता हूँ ।
ताल-तलैयों में निगराता हूँ ।
शैवालों के गीत गाता हूँ ।

******०********

7-बादल आये

बादल आये ।

बादल आये ।

वारिधि से पानी लाये ,बादल आये ।

जियरा हरषाये ,घन घहराये ,

बादल आये ।

उमड़-घुमड़ ,मन सिहराये ,

बादल आये ।

स्याह अन्धेरी ,उजला शरमाये ,

बादल आये ।

रोमांसित मन ,मयूर नचाये ,

बादल आये ।

आँख मिचौली टकटकी ,किसान लगाये ,

बादल आये ।

किसानी में दिल दहलाये ,

बादल आये ।

प्रेमी को, प्रिय मिल जाये ,

बादल आये ।

उजियारा रौशन कर जाये ,

बादल आये ।

कजियारा जी डर जाये ,

बादल आये ।

दिन में ही, रात सुझाये,

बादल आये ।

पथिक राह भटकते जाये ,

बादल आये ।

हरियाली चहुंओर बनाये ,

बादल आये ।

अलसाये लरजाये खिलजाये ,

बादल आये । बादल आये ।

-----0-----

8-जिनमें कोयल की कला है, पुरस्कृत हो रहें है

सच जानिये,
पितामह भीष्म अभी भी जीवित हैं,
कर्म क्षेत्र में युध्द चल रहा है,
योध्दा बदल रहा है,
मैदान बदल गया है ,
समर में न जाने कौन मर रहा है|
आज किसकी बारी मंच कोई हो ,
सब में सब सवाली है,
धुंधलका गहरा रहा है,
जैसे सब कुछ खाली-खाली हैं |
कौवे भी तिरस्कृत हो रहे ,
जिनमें कोयल की कला है,
वही पुरस्कृत हो रहें है,
सज्जनता धूल धूसरित हो रही है |
नीड़ में घुसा अनभला है ,
मुक्त जो मंच पा गया ,
आहत कर ,
छन्दबध्द पंक्तियों को खा गया |
बेसुरे मंच से चटखारे पा रहे,
सस्वर किस्मत पर गा रहे हैं |

गीत क्यों लिखूं ,
चुरभईये दम ख़म से जी रहे हैं |
छंद अज्ञातवास कर रही ,
वाह की कराह श्रोता भर रहा हैं ,
नहीं चेते तो जानों ,
कविता कराह भर रही हैं |
कौवे भी तिरस्कृत हो रहे ,
जिनमें कोयल की कला है,
वही पुरस्कृत हो रहें है ,
सज्जनता धूल धूसरित हो रही है |
कर्म क्षेत्र में युध्द चल रहा है,
समर में न जाने कौन मर रहा है|

----o----

9—दिल लगाया हिमाला से

दिल लगाया हिमाला से,
 सोचकर मुहब्बत होगी देवदार से ,
रुह लेकर उसके करीब जाता रहा ,
छोड़ राह शाहबलूत के |
घास बिच्छू के जब डसे,
 किल्मोड़े ने ऊफ न करने दिया ,
अफ़सोस की जिसकी सोच के,
 चला हमसफर न बना |
सितारा भी न बन सका ,
मलाल नहीं हैं मुझे अख्तर से ,
मुराद न पूरी हुई रिज़वी बनके ,
अपने पर सोचा करता रहा |
हम तो लम के राही ,
जबां ओ कलम किस्मत हमारी ,
सौदागर के हाथों हो गई ,
शायद शायरी की सिपहसालारी |
हम तो कोसी के प्यासे ,
जो कोस भर भी न ठहर सकी ,
मुहब्बत देवदार के दरख्तों से की ,
उसने आस्मां से यारी कर ली |
दुश्वारियों से हैं वक्त कटते ,

दिल में एक कसक सी हैं रहती ,
दोस्त मुहब्बत से मिला करो ,
जमीं का हूँ जमीं का ही रहूंगा |
दोस्त हूँ , जमीं का हूँ ,
सोहबत हमारी हमसे मिला करों ।

[अख़्तर (तारा) , रिजवी (देवदूत)]

10-चिंगारी

अटवी के प्रस्तर ,
खंड -खंड घर्षण,
चकमक चकाचौध ,
जठरानल को शान्ति दे ,
अखंड जीवन की,
लौ चिंगारी ।
बन मशाल,
प्रेरणा की मिसाल ,
मंगल की,
चमकी चिंगारी ।
चहुँ ओर ,
तम का डेरा।
जन सैलाब चिंगारी से,
अभिभूत वडवानल घेरा ।
व्याकुल आने को नया सवेरा,
रानी के खडगों की चिंगारी ।
अमर कर गई ,
जन-जन में जोश भर गई ,
सत्य अहिंसा प्रेम दीवानी,
बापू की स्वराज चिंगारी ।।
नूतन अलख जगा गई ,

देशभक्त बलिदानी,
चिंगारी दावानल फैला गई ।
युग - युग के ज़ुल्मों को सुलझा गई ।
नई रात ,
नई प्रात: करा गयी ।
चिंगारी मशाल,
मिसाल बन ,
स्वाभिमान बन,
राष्ट्र गीत सुना गयी ।।

****

11-चमचा

आम पलास के भाग्य भी फूटे ,
प्रकृति कोख मची ,
एक ही मच-मच ।
जब से आदमी हुआ है चम्मच ।
आँचल का चमचा विचारमग्न पाया ।
हर पल मन होता था आली ।
कर में रहूँ या प्याली ,
साहब से ज्यादा मेम निराली ।
आफिस में चम-चम चमकूँ खाली।
सवाली का शहजादा अंदाज़ों में खुशहाली।
अब तो गीदड़ शेर की करता रखवाली ,
चमचे का ठाठ न होता कौन भला पुरसाहाली ।
आप उबले या कढ़-आई में खौले ।
आ जाते चम्-चम् हम हौले-हौले ।
रहस्य मेल जोल कौआ-कोयल जैसा गहरा ,
कड़ा हो चाहे एन0एस0जी0 का पहरा ,
सब दर आगे पीछे हम ही होते ,
युग किसी अरिशासन -शासन का भी हो ले ,
समय देख समय पर हम ही सबसे बोलें ।

लटपट में जीवन नैय्या जब भी डोले ।
चमचे का भी यौवन लेता करवट और हिचकोले ।
भई गति सांप छछूंदर की जब चमचे छोड़े चोले ।
बदल रहा काल चक्र बदल गये फरेबी मनटोले ।
धरम -पद में लिख पढ़ गये तथागत ,
बुरा कर्म ही है बुरा का आगत ,
चम्मच ही बदनामी में कल छी बन जाती ।
कल की छी आन-बान की चाहत बन आती ।
कीचड़ में कंकड़ फेंक मोल रहे है आफत ,
अपने पर जब पड़ जाती तो कहते सांसत ,
बदले युग में चमची ने अवतार लिया ,
चमचे का अच्छा खासा बंटाधार किया ।
चमची ने पर्दा मर्दा दोनों को शर्मसार किया ।
चम्मच गुप्त राग है भईया ,
नाच गयी धरती खा गये कलईया।
भूल के सारे दुःख गा रहे बप्पा मईया ।
चमस चला था पवित्र कराने चमचा बन आया ।
अंग्रेज़ों ने लपक -खरोच-कौर चखचख औज़ार बनाया।
सभ्य समाज से सर्व समाज में चम्मच राग फैलाया।।
----------0----------

12- कलि

तृषित मन हर्षित,तन कलि का यौवन ,
प्रभुता पल्लवित,मनुज ढूंढ रहा उपवन ।
धरती का स्वर्ग है यहीं पर ,
यहीं है गंगों –जमन,
अट्टालिका के अट्टहासों में ,
बुझी- अनबुझी मानवता का नयन ।
कल-कल नदियों में शांत ,
हो गया कलरव खंजन ।।
पवन को क्यों कोसते ,
मसोसते क्यों अपने मन ।
प्रतिकूल परोसने का प्रतिफल ,
जहरीला हो रहा आँगन ,
नयी सोच में नये फलक में ,
खो गया कान्तार -वन -कानन ।।
अब पूजन कहाँ ?
पूरब के सूरज का ,
किसको प्रतीक्षा संध्या वंदन ।
चकाचौध में भूल गया ,
वेश - भाषा और अपना चाल-चलन ,
बदले नाम गलियों के,
गलों के सुर बदले,

बदल रहा चमन ।।
प्रगति के नाम कुछ भी मिल जाय,
जयकारा करो नमन ।
दुर्गति अब है सझियारा ,
बांट जोहती घटना और मरण ,
मनु सन्तति सचेत हो कब ?
मानवता का करे वरण ,
प्रांगण हर घर बाग़ -बगीचे हो ,
कब होगा शुध्द सपन ?
सझौती होगी प्रेम भाव संग,
मिल जिए करे गन्तव्य गमन ।
एकता के संकल्पों का व्रत ,
जीवन में ले करें आचमन ।।
आगत का करते स्वागत,
तथागत ,
बोधि बुध्द,
न्यग्रोध शुध्द,
प्रबुध्द बन ।।
----0-----

13-तरई के गाँव में ,चन्दा नहाय रहा

तरई के गाँव में ,चन्दा नहाय रहा ।
मछरी के पोखर में ,दिनकर ठंडाय रहा ।

जिनगी के ककहरा में देस अऊ गांव समाय रहा ।
अइसन मोह अऊ बिछोह जियरा छटपटाय रहा ।

तरई के गाँव में ,चन्दा नहाय रहा ।
मछरी के पोखर में ,दिनकर ठंडाय रहा ।

मनवा क गतिया दिनवा -रतिया , अटपटाय रहा ।
किस्सा अऊ बतिया हियरा में लहराय रहा ।

तरई के गाँव में , चन्दा नहाय रहा ।
मछरी के पोखर में ,दिनकर ठंडाय रहा ।

उतान सेवारे क मचान पनिया में बनाय रहा ।
पात बीच बेरा के फूल जइसन गमगमाय रहा ।

तरई के गाँव में , चन्दा नहाय रहा ।
मछरी के पोखर में ,दिनकर ठंडाय रहा ।

मन मगन सेवा सहचरी में तन कुनमुनाय रहा ।
सुख शान्ति अशीष सब जन पे गुनगुनाय रहा ।

तरई के गाँव में , चन्दा नहाय रहा ।
मछरी के पोखर में ,दिनकर ठंडाय रहा ।

निर्मोही मनवा बैरी पपीहवा टेर में अटकाय रहा ।
संगी सब लुटाय खाली हाथ गेहिया को जाय रहा ।
तरई के गाँव में , चन्दा नहाय रहा ।
मछरी के पोखर में ,दिनकर ठंडाय रहा ।

******

14-ऐरे गैरे

ऐरे गैरे ,
गर्दिश के सितारे,
असंतुलित मस्तिष्क,
बिखर जाते शब्द,
लिखा कुछ होता,
कह कुछ जाते ।
सोरे -सोरे,
बातें चुभ जाती ,
पोरे -पोरे ,
छोरे-छोरे
सुमरति भोरे।
और अँधेरे,
ऐरे गैरे
नत्थू खैरे मोरे ,
सब छोरे,
ऐसे वैसे
मानव बना,
जैसे तैसे,
जीवन कटता,
प्रतिपल,

पैसे-पैसे ।।
बेलगाम ,
जिह्वा के टोरे ,
कह जाती,
मोरे-तोरे ,
करियारे,
कर्कश,
ठूँठ के ठौरे,
ना मधुमास,
ना भौरे,
अक्षर -अक्षर,
विध जाते,
तन पर,
लगे हो,
कंकडिया के कोरे ।
हम पर,
चाहे कितना फेंको,
मन पर,
न फेंको,
आग लगे कौरे ।
नदी में तैरे,
पनसुइया ,
जैसे बंधी हो डोरे,
विवश जीवन,

पतवारे,
मझधारे,
जाय उबारे,
कैसे उस पारे।
गौरव मोरे
दुःख हरे,
सुख भरे,
ऐरे गैरे ,
गर्दिश के सितारे,
शब्द बिखर जाते,
लिखा कुछ होता,
कह कुछ जाते,
बातें चुभ जाती,
पोरे -पोरे ।
ऐरे गैरे ,
नत्थू खैरे ।।

---------0-------

15-कविता

व्याकृत नहीं ,
वर्तमान कविता ,
प्रगति प्रयोग ,
बन परिणिता,
उन्मुक्त मुक्तक ,
नाम कविता |
कर्मेन्द्रियों में सिमटा अलंकार ,
ज्ञानेन्द्रियों को भा रहा श्रृंगार ,
छल-छंद छानते रहे शब्द बौछार ,
रस बरसा न सकी कविता,
सुहाने रालों पर हो मन मीता ,
झट-पट का ज़माना ,
क्यों बांधें छंदों में,
कविता के पंख लगे है,
जैसे परिंदों में ,
अब रचना रच ना ,
पर भार हुई,
कविता कविता ,
दुधार हुई,
जो भास् रही कविता ,
कवि बखान रहे ,

अब कर ताल रही,
कर ताली रही,
कविता कवि को,
निहार रही,
राह किनारों में ,
कविता कराह रही

16-भेडिया और कबीर

हो रहा कालचक्र का फेर ।
भेडिया हो गया दो पैर ।
बगुले उजलेपन से मनाते खैर ।
अब तो अपनेपन से हो रहा बैर ।
कबीर की बानी का था टेर ।
ताते तो कौआ भला,
तन-मन एक ही रंग ।
दो पैर भेड़िया ओढ़े उज्जर रंग,
बगुले भी मात खा गये ,
श्वेतवसन खीर भात खा गये ।
जंगल-पहाड़-नदी छोड़ शहर आ गये ।
योजनाओं में कुछ ऐसा छा गये ।
एक साथ कई शिलान्यास आ गये ।
गाँव -नगर का साथ खा गये ।
जाड़ा गरमी बरसात पचा गये।

बाजारीकरण के मुखौटे बना गये ।
हौसले से फैसले तक ,
पीत-स्याह-सफेद में छा गये ।
फक्कड कबीर थे,
फक्कड रहे फक्कड़ी में समा गये ।
उज्जर रंग के गुण
समय रहते समझा गये।
इंसानियत का श्वेतपत्र दिखला गये ।।

---------0--------

17-तुम्हीं तो हो मेघ

प्रकृति की कोख से ,
अदृश्य से दृश्यमान ,
तुम्हीं तो हो मेघ ,
आस लगाये किसान ,
आतप शरद के मध्य तुम्हीं हो ।
सागर ,नदी,सरोवर से तुम्हीं हो ,
पर्वत की ओट ,घर्षण या चोट,
तुम्हीं हो |
रक्तिम,कालिमा ,
सिंदूरी,श्वेत का आभास ,
शीतलता,आर्द्रता
मेघ ही जीवन श्वास ।
इंद्र -बज्र की हुंकार ,
गर्जनों में भी प्रकाशमान,
मेघ-बूँद से माटी सोधती ,
ताल-तलैया रसाप्लावित लहराते ,

चारो कोरो पर दादुर गीत उच्चार ते,
प्रकृति पुरुष उदार मना,
चिरयौवन,उमड़ -घुमड़,
घहराते,ललचाते,
मयूरों को लजियाते ,
यक्ष-विरह संदेशक ,अलक-पलक उर्-झाते ,
मेघ तुम्हीं हो ,
स्वाती बूँद तुम्ही में ,
जड-चेतन अमरत्व तुम्हीं से ,
सरोवर, नदियाँ अस्मिता खोने को बेबस ,
सागर खारे पानी को बरबस रोता है ।
परिवर्तन की आंधी में नैसर्गिकता के झंझावातों ने ,
कृत्रिम मेघों को नभ में टांग दिया
तुम्हीं तो हो ,
अब मेघ
बूंदों के बदले,
बजरी ,रेत लिए फिरते है ,
ज़हर घोल रहे व्योम पर,
अतीत के खेलों में ,
मेघों में हाथी खोजा करते थे
विकास-परिधि में
झंझावात हाथ आता है ,
बंद खिडकियों के अन्दर
आर्द्रता,नमी के बदले रेत

चला जाता है ,
मेघ,
रेत के बन ने लगे है,
आर्द्रता उष्णता को समर्पित हो चली।
भारत रत है,कुछ बचाने को ,
लौट चले
मेघ लाने को ,
इस पावस में मेघ आना ज़रूर,
आर्द्रता,शीतलता को दिखाना ज़रूर ,सुनाना है
भविष्य और वर्तमान को।.....
ज़रा देख तो ऊपर
गरज रहे है
बरस रहे है .....
---------0-------

18-संतराश

पल छिन,
संतराश ,
हर दिन
निखरा रुप |
तम से प्रियतम,
कम से कमनीय,
परुष से कोमल,
प्रस्तर तुम |
छिला जो ,
बन शिला ,
समुद्र थपेड़ों में,
अचल अडिग,
मानवता |
पिंड छुडाने,
कछुआ -धर्म,
सहेजे मानव,
प्रस्तर ,
मूक बन जाते |
अहर्निश ,
ताडित,
संतराश से ,

आतप ,ठिठुरन,
बारिश ,
कूट,छांट |
अनुशासित,
यौवन तन ,
मुनि अगस्त्य ,
शापित,
विन्ध्य अटल ,
दण्डवत,
पथराई,
संतराश के,
ठुम -ठाक,
शिला प्रकटी |
नारी ||
शिला की धूम-धाम,
मानवता पर,
भारी ||
गढ़ जाता,
संतराश,
अनात्म की आत्मा,
अशुद्ध को शुद्ध,
तथागत को बुद्ध,
बांछें खिल उठती,
शिला बोलती,

अतीत भेद खोलती,
संतराश गढ़ देता |
शब्दों को,
छिद जाते समय,
भीतों में उकेरे,
खेतों में खड़ें लाट,
लूटे हुए को,
पारखी तराश नहीं,
पाया,
तरस गई।
संतराश,
आत्मा,
उस प्रस्तर,
वीराने में,
नई गढने को,
उमग-उमंग,
निमग-निमग्न,
जीवन प्रस्तर ।।
तन कोमल,
संतराश,
अपनी पटिया पर,
रच जाता ,
न स्याही ,
न कलम ,

राज-फरमान ,
संतराश का लम ।
राजघराने,
महल-दुमहले,
घट-घाट,
पुण्य कमा गये ।
पाप जमा गये,
हाथों में गाँठ,
बना गये,
झंझावाती दिवसों में,
झुरझुरी छाई,
संतराश के,
कर कमलों में,
प्रस्तर का सीना,
धक -धक् करता,
झूठी शानों पर,
बड़ी महफिल,
बड़े रंग शाले,
कत्लगाह,
बने शहीदों की,
फेहरिस्त बनी,
अंगूठे काटे गये।
संतराशो के,
तामीर न हो ।

आखों देखी,
बुनियादों को,
झुठलाया,
शासक सत्ता भोगी,
पद-चाप,
सहारे कंकड़ होता,
संतराश सहारे देव ।।
राज मार्ग ,
पुष्प चदाने ,
तराशे प्रस्तर को ,
आस्था के मूल ,
संतराश को,
याद न करता कोई,
मशीनी युग ,
संतराश न कोई ।
हर दिन,
निखरा रुप |
तम से प्रियतम,
कम से कमनीय,
परुष से कोमल,
प्रस्तर तुम |
संतराश ।।
-----0--------

19-प्लेट फ़ार्म

भागती रेल,

उतरते चढ़ते,

इंसानों का खेल ।
और
प्लेट फ़ार्म की,
पटरियों में,
उलझ,
रह गया,
यौवन चिरन्तन ।
ओझिल,
लौह लकीरों में,
रेलगाड़ी ,
भोग की गठरी ।
हाड-मांस की ठठरी ।।
लिए आवागमन ।
प्राण-पंख पखेरू ।
कोटरों से शाख तक ,
घर से कार्यस्थल तक,
मन है मगन ।

ढलकता अतीत,
पावन,पवन,
चितवन,
अपलक
देखते हो मगन ।
कोलाहल,
सब हो रहे हवन।
कर धरा को नमन।
कर लिया गमन,
मोह गहन,
काल चाल में,
होता सब यहीं दहन ।
पंचतत्व जटित रतन ,
स्नेहिल धवल किरन,
त्याग दृष्टि श्रवन ,वचन ,
हाड-पिंजर से छूट जायगा तन ।
नौ-द्वार काया और किरन।।
युग परिवर्तन ही जीवन,
कर्म पथ पर ठेलता मन,
शाश्वत चिन्तन क्रियाशील को नमन।।
छूटते वन उपवन ,
पुल-पेड़ छूटता गगन ,
बस्तियों का आकर्षन ,
आत्मा कर रही,

परमात्मा का अन्वेषण ,
अबूझ जीवन,
प्रतिपल करता रहा मनन ।
मन है मगन ।
ढलकता अतीत,
पावन,पवन, जीवन,
सब हो रहे हवन।
युग को नमन।
शाश्वत, चिन्तन,
क्रियाशील को नमन।।
--------0-------

20-देहरी का सूरज

देहरी का सूरज
आदमी की परछाइयों को ,
तिर्यक बढ़ा गया|
कद में आदमी
छोटा हो गया ||
धीमान,
तिर्यक हो गया |
सूरज का
देहरी पर आना ,
शायद ,
परिवर्तन है,
प्रकृति का,
जीवन का
स्पंदन का,
क्रन्दन में
हास-परिहास,
सम्वेदना,
मरती जाती है,
देहरी से बाहर,
मानवीयता
सूरज की ओट ,
किसी छाँह में,

जहां अन्धकार है,
आदमीयता,
प्यार है,
ठंडी,
दुलार है,
कोटर में रहने लगी है,
परछाई,
औसत से बड़ी होती है ||
उसमें,
छ्हास होती है,
ठंडक होती है,
परछाई,
सम्वेदना का नीड़ है,
तिर्यक होने का सेहरा,
किसी और के माथे है,
अब तो नदियाँ ,
सडक,
सब,
हांफने लगे है |
लपटें उठनें लगीं है,
उनके ह्रदय पटल से ,
उन्हें रौद रहा है,
आदमी ! सिर्फ आदमी!! ||
-------0------

21-चढ़ना (आरोहण)

दिन का चढ़ना ,
यौवन ,
रंग का चढ़ना ,
निखरन ,
शीत का चढ़ना ,
सिहरन ,
मेघ का चढ़ना ,
हर्षित मन ,
देश की खातिर
चढ़ना ,
शहीदी परचम ,
प्रेम की वेदी चढ़ना ,
पागलपन ,
आस्था-दीप पर चढ़ना ,
संतुलित मन ,
सूर्य अर्घ्य बन चढ़ो ,
करो आचमन ,
सिहरो ,
शोक प्रकम्पित ,
अंतरमन,
चढ़ो ,पिप्पलिका बन,
हिमगिरी तुंग शिखर,
लक्ष्यित जीवन,

धूम्र सदृश ,
रहो गगन ,
प्रगति लक्षण ,
बढ़ता जीवन ,
वृक्ष बढ़े ऊँचा गगन ,
पल्लवित,पुष्पित,फलित,
गीत है गढ़ता ,
खोल पर भले ही
चाम मढो ,
गीत के बहाने,
लक्ष्य को गढ़ों ,
तरु पर चढ़ ,
मुस्काती लता ,
लहलहाती फसल ,
किसान,
मेड़ चढ़ ,
निहारता,
युग गढ़ों ,
अहर्निश चढ़ते चढ़ो ,
पारे का चढ़ना
कुत्सित राग ,
सत्संगति खोले भाग ,
चढ़ना सवार बन
पहरुआ ,होशियार बन ,

त्याग दो नावों का ,
जीवन वर्जनाओं का चढ़ना
साधन साधनाओ पर ,
सन्मार्ग मानवता पर ,
रंग की तरह ,
उमंग की तरह ,
देश की खातिर चढो ,
युग गढ़ों |
-------0-----

22-पोखर

प्रकृति ,पुरुष के,
सहचर पोखर |
पुरखों के,
संस्कार सहेजे|
पोखर ||
स्मृति झंझावातों में ,
सम्वेदना प्रतिबिम्बित |
प्रकृति के पास ,
मानवता का वास |
दोपहरी में,
करता सूरज |
पोखर में,
उन्मत्त स्नान |
स्मृतियों के कोर ,
गोधूलि के बादल ||
ओट में लुक-छिप क्रीड़ारत,
चाँद इसी पोखर में |
नि:शब्द ,शांत,
रजनी के आँचल |
पिछवाड़े घर के पोखर में ,
सितारे छिटके है गगन के||
करते अटखेलियाँ ,

पोखर में |
कमलिनियों का हास-परिहास,
पोखर में उल्हास ||
सूख गये पोखर ,
बस गये नगर |
पौध ऊगे है कंक्रीट के,
सत्पथ साथी डामर के ||
लोभ-लालसा की सरपट राह ,
मृग-मरीचिका की उठती लौ |
गर्म हवा के झोके आते ,
तन्हा तन जल जाते |
पोखर तट का ,
एक शिवाला ||
वृक्ष फलदार और फूलों का ढ़ेर ,
फलदार बने निवाला |
फूलदार हुए आरती के फेर ,
अब अट्टालिका से |
आते कूड़े के ढ़ेर,
मानवता की ऐसी छुप गयी ||
कहाँ बयार ,
पुरखों के प्रति |
गुम हो गया प्यार,
प्रकृति ,पुरुष के |
सहचर पोखर,

पुरुषों के संस्कार ||
सहेजे पोखर !
--------0----------

23-चुड़ैल

प्रकृति मौन।
कौन ,
धरातल ,
चुड़ैल,
बन आया ।
छाया के,
पारावार मध्य,
उलझा जीवन-आधार,
आत्म परमात्म में न आया ।
प्रकृति मौन ।
पंचवटी की,
अटवी में ,
सप्तर्षि,
हो रहे बेहाल ।
झुरमुट- झंझावात,
बसेरों में विप्लव,
दु:स्वप्न सदृश,
सहज मनुज ,
अचल अडिग सवाल ।
गण्डा -धागा टोना-टोटका,
सुरक्षा कवच बनते जंजाल ।
तृषित मानवता बुन लेती ,

विराग जाल ।
प्रकृति अंश ।
घनेरे वट -वृक्षों से,
पा रहे दंश ।
कर लेती स्वभाव क्रूर,
बन जाती चुड़ैल ।
प्रकृति मौन ,
यायावरी ,
नाच नचाती ,
छप्पर -नदी और शैल ।
नियति संत्रास क्रीडा ,
मन का मिटा न हो मैल ।
असंतुष्ट -असंतृप्त मानवता ,
आकार ले होती चुड़ैल ।
घनियारे अन्हियारे ,
बबूल -बड़ नहीं ढूढ़ पाए हल ।
भटकती आत्मा की परिणति ,
समय का खेल ।
वीभत्स घिनौने रूप का मेल ।
बना देती चुड़ैल ।।
प्रकृति मौन,
चीत्कार फुत्कार,
भाषा हो जाती सत्कार ,
जोग -विराग माया ।

जतन से,
वशीभूत हो आया,
आत्म-परमात्म में,
नश्वरता विलीन हो रही काया।
तपसी के वश में बस,
हाहाकार सीत्कार स्वीकार,
प्रकृति मौन ।
छोड़ क्रूर -कल्मष अभिशाप ,
अन्हियार परमात्म,
प्रकाश बन आया,
योगी ही विरही ,
क्षुधित को संतृप्त कर पाया ।
जग भरमाया भटकी काया ,
परमात्म की माया,
कपोल कल्पित,
क्रूरता की असहज लकीर,
चुड़ैल नाम से जाया ,
कलि के युग में ,
परमात्म मिलन से स्वर्गिक सुख पाया ।।
----------0----------

24-लंका

युद्ध,
युग युगों से चल रहा है |
काल में ,
सब कुछ ढल रहा है |
देव के साथ ,
दनुज भी पल रहा है |
सीता का बयान ,
चल रहा है |
कृषक के पीछे ,
सब चल रहा है |
किसान का गरीबी से ,
जनम - मरण का नाता है ।
सीता यक्ष प्रश्न है ,
लंका ,
सुरसा का मुंह ?
पुरुषोत्तम की सीता,
या लंकारि की लंका,
ब्रह्मचारी दौड़े,
धैर्यवान दौड़े ,
मर्यादा दौड़ी ,
रावण लगा रहा है ।
सीता के उपक्रम में ,
रात दिन थका हारा ।

रावण की लंका ,
घर- घर की लंका ,
सीता कृषिकर्म की रेखा ,
सस्य उपजते देखा ।
लोभ -प्रीती का ,
कार्य व्यापार ,
मन की नहीं उदर की ।
कल्पना लंका बन गयी ,
पूरी सीता हडपने की ,
योजना सभी बना रहे थे ।
सभी पेट का ,
कार्य व्यापार चला रहे थे ।
सीता जहां की थी ।
सीता वहां समा ही गयी ।
अयोध्या में भी,
चरण पादुका की आड़ में,
राज कर रहे जो ,
सो न जनता के, न हमारे ,
अपशब्दों में भी लंका एक शब्द ।
जिसका डंका इसी अब्द ।
कुपोषित - वीभत्स ,
नहीं सुशोभित ,
जब - जब,
<u>जर-जोरू-जमीन,</u>

जोड़ने की बात,
सीता की याद ,
लंका के साथ,
रावण का नात,
नश्वर लोक,
किसका शोक,
लंका आज भी,
सीता आज भी,
मौलिकता खोज रही ,
आर्यावर्त, पूर्वी -बंगाल,
कहाँ है ।
भाई भतीजावाद,
टूटते रिश्ते नाते ,
अतीत की याद,
किले- महल खँडहर सताते ।
लंका से पहले की कहानी सुनाते ,
याद हो कुछ तो सुना देना ,
अच्छा कुछ गुनगुना देना ।
कलि -काल में,
चल रहे कार्य व्यापार पर ,
कदाचार के नाम ,
विराम लगा देना ।।
--------0------

25-भला किसे अच्छा लगता है ?

साम की नीव ,
दाम के मोल ,
भेद की चाल पर,
चलना ।
भला किसे अच्छा लगता है ?
उत्तेजनाओं के सहारे,
वर्जनाओं को,
तोड़ जाने का,
भय समा जाना ,
भला किसे अच्छा लगता है ?
मोह की अज्ञानताओं ,
के वशीभूत ,
विषमताओं में जीना।
भला किसे अच्छा लगता है ?
क्रोध के रव में ,
आपे से बाहर ,
बकवास,
भला किसे अच्छा लगता है ?
प्रेम की ललक में ,
नयन मूँदें पग बढ़ाना ,
भला किसे अच्छा लगता है ?

पुष्प की ,
चाहत भी हो,
काँटे की पीड़ा ,
भला किसे अच्छा लगता है ?
लालसाओं के आसरे,
कल्पनाओं के महल,
सपने जगा जाना,
भला किसे अच्छा लगता है ?
शान्ति के सहारे,
गुमराह का,
राह पर हो जाना,
हाँ यही अच्छा लगता है ?
समरसताओं में जीना सभी को अच्छा लगता है ?
विषमताओं में जीना किसे अच्छा लगता है ?
------0--------

26-पर्यावरण

मनुज का,
दनुज खेल ,
परिवर्तन पर्यावरण ।
प्रकृति,दोहन की रेल,
बदलता,भूमंडल का आवरण ।।
छिन रहे छाँव ।
ठौर जीव जन्तु जुगाली के,
करते, नित जिस ठाँव ।।
छल-छदम,
मन करता रहा वरण ,
बुद्धि मन प्रतिकूलता में
भागीदार रहा हर क्षण ,
नैसर्गिकता त्याग ,
आधुनिकता में धूमिल,
हो रहा अपना ही आवरण ।
अनायास मौत, तबाही, विनाश।
अर्थ-पिशाचों की अंधी भावनाओं में,
असंतुलित वातावरण ,
सब कुछ परिणति ,
प्रकृति शोषण,
उपशम भाव करे वरण,

लोभ संवरण ,
जल बिन बंजर नयन के प्रांगण ,
जल रही नदियाँ क्षेत्र सैकत कण ,
संस्कार पूजन का कहाँ बनाये तोरण ।।
तृण नहीं कैसे हो जाये उ -ऋण ,
मर्त्य-लोक में
धरती का करे श्रृंगार ।
प्रकृति का संतुलन,
मानवता का,
आवरण ,
पर्यावरण ।।
--------0--------

27- कुरेदना

कुरेद -कुरेद कर ,
कर जाती मूषक ,
नूतन गेह बनाती ,
सहेजने जीवन,
अन्न सजाती ,
कुरेद-कुरेद,कुरेद- कुरेद ,
फुंसी फोड़ा बन जाती ,
तन कष्ट बढाती ,
कुरेद न देना भावों को ,
हरित घावों को ,
वेदना कराह समेटे,
संवेदना क्रुधित हो जाती ,
कुरेद न देना,
सुषुप्त बीजों को ,
प्रस्फुटन से पहले ,
जीवन त्यज देगें ,
कुरेद न देना,कुदेर न देना ।
पयोधर वृक्षों को,
अपनी पहचान बना देगें ,
मन्दार कुरेदना ,

ज्योति क्षरण आमन्त्रण ।
कुरेदना कपि छौनों को ,
कुदेरना बर्र छत्र को ,
कुदेरना नागमणि मस्तक को ,
स्व-विनाश आमंत्रण ।
टिम -टिमाती लौं ,
यदि कुरेद दिया,
यकायक बुझ जाती ,
कुरेदना है,
तो पन्ना के बीहड़ को कुरेदों,
हीरों का मोल मिलेगा ,
कुरेदना है,
तो कोश के शब्द भण्डार कुरेदों,
अर्थ बोध मिलेगा ,
कुरेदना है,
तो व्यथा का हल कुरेदों,
मरहम का मोम मिलेगा ,
कुरेद सको तो स्वयं कुरेदों ,
मूषक की डगर नहीं
जीवन का अगर-मगर मिलेगा,
मानवता का मर्म मिलेगा ,
अपनों का दर्द मिलेगा ।।
कुरेद सको तो स्वयं कुरेदों ,
जीवन का अगर-मगर मिलेगा,

मानवता का मर्म मिलेगा ,
अपनों का दर्द मिलेगा ।।
---------0---------

28-**आचमन**

कल्पों से ,

पुरोहित ,

यज्ञ आहुति से ,

ब्रह्माण्ड शोधित कराने ,

प्रौक्षणि से यजमान को ,

करा रहा आचमन ,

प्रकृति पुरुष प्रणम्य ,

आचमन आधृत,

तप- आतप ,

धन्य भुवन ।

विनायक साक्षी,

विघ्न शमन ,

धार कर मध्य ,

अमृत आचमन ,

भास्वर जीवन ।

जल्पों में तकता ,

एकाकी मन ।

शुध्द हो गया ,

गगन आँगन ।

शुध्दि को तरसता ,

चिरन्तन ।

मन्वन्तर में होता,

आचमन ,

तन लगता दूषित वसन ।

तृषित गल्प जीवन-मरण ,

नीर तज नहीं सकता नयन ,

वेदिका पर हो रही ,

प्रदक्षिणा जल सुमन ,

अक्षर बन सत्पथ गमन ।

जाह्नवी नीर सम जीवन ,

पुरोहित

यजमान का मिलन ,

प्रकृति-पुरुष का आचमन ।

अमृत -मंथन ,

विकल्प छोड़ संकल्प को करते नमन ,

शुध्दि बोध मंगल बूँद से सघन ,

सरस जीवन तन औ मन ।

कर लो स्वच्छ निर्मल आचमन ,

जीवन बगिया सुघर बन जाय उपवन ,

पुरोहित

यज्ञ आहुति शुध्दि का ,

आचमनी से करा रहा आचमन ,

अमृत -मंथन ,

विकल्प छोड़ संकल्प को करते नमन ।

याचना कर रहा जीव अल्प है जीवन,

पुरोहित ,

परमात्म का करा रहा आचमन ,

शुध्दि बोध मंगल बूँद से सघन ,

सरस जीवन तन औ मन ।

विकल्प छोड़ संकल्प को करते नमन ।

----------0----------

29-<u>भवितव्य</u>

उस नींव की गहरी दीवार का क्या करोगे।
कुल के सम्भार आचार का क्या करोगे।
भंवर में नाव संग पतवार का क्या करोगे।

ज़िन्दगी जब मंझधार तब क्या करोगे।

जब भवितव्य ही है देव के हाथ तो क्या करोगे।।

गर्वित तन,आत्म सूझता नहीं तो क्या करोगे।

किराए की ठठरी में अहं का क्या करोगे।

मोह में यथार्थ को झुठलाकर क्या करोगे ।

बिना विचारे कर्म कर पछताये क्या करोगे।

जब भवितव्य ही है देव के हाथ तो क्या करोगे।।

अनमोल समय चूकने पर याद कर क्या करोगे।

भवितव्य के दरवाज़े खुले उनका क्या करोगे।

अपनी सोच धरी रह जायगी क्या करोगे ।

हीरा जिसे समझा वही जहर घोलेगा क्या करोगे।

जब भवितव्य ही है देव के हाथ तो क्या करोगे।।

अतीत का परिमाप भी बदला युग में क्या करोगे ।

वर्तमान का पायदान भी बना मजबूत हो क्या करोगे।

भवितव्य कालक्रम से मृगमरीचिका में क्या करोगे।

अंतर्हृदय कोलाहल विषाक्त संस्कृति में क्या करोगे।

जब भवितव्य ही है देव के हाथ तो क्या करोगे।।

जीवन ग्रथित कदली पत्र संग बेर का क्या करोगे।

भवितव्य के हर द्वार पर भटकाव का क्या करोगे ।

खेवनहार जिस विधि राखन चाहे रखे क्या करोगे।

श्वास-विश्वास आधार जब छूट जाय तो क्या करोगे ।

जब भवितव्य ही है देव के हाथ तो क्या करोगे।।

==========

30-अमरत्व

आस पर विश्वास धरो ।
नश्वर को नया स्वर दो ।
जीवन में अमरत्व भर दो ।।

प्राण भरे ,दो आस,
थमते ही जीवन श्वास ।
टूटा धागा, नेह विश्वास।।
किसी के भाग पहुंचा,
किसी को ,मिली हंसुली ।
लूट मची कुछ ऐसी,
कविता के तार ताने-बाने ,
पंक्ति -पंक्ति से बंट गयी ।
पहली पंक्ति दूसरी से कट गयी ।।
अर्थ अनर्थ में छट गयी ।
धरी रह गई धरा पर देह,
पल भर पहले की छूट गई नेह ।
अर्थ पिशाचों की दुनियां,
कभी न सोचती अपना चाल,
कल अपना भी होगा यही हाल ।
टूट पडेगी आने वाली पीढ़ी,
निधन सुनते निर्धन कर देगी ।
देह छोड़ दनुज का खेल,
खेल रहे जो हम ।
हमसे खेलेंगे भावी जन-मन।
स्वार्थ परार्थ त्याग परमार्थ भाव धरो।

आत्म परमात्म का ध्यान करो ।

आस पर विश्वास धरो ।

नश्वर को नया स्वर दो ।

जीवन में अमरत्व भर दो ।।

------0-----

----------0----------